IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्राध्यापकों की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव

प्रों. डॉ. परविन्दर हंसपाल
डीन एवं डायरेक्टर
शोध निर्देशक
मैट्स स्कुल ऑफ एजुकेशन
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

श्रीमती बर्नाली राय
पी.एच.डी. शोधार्थी
मैट्स स्कुल ऑफ एजुकेशन
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश –वैश्विक समाज के आधुनिकीकरण के दौर ने सम्पूण मानव जीवन के जीवन जीने की शैली में वृहद परिवर्तन एवं बदलाव ला दिया। अधिकतर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत पसंद न पसंद की दृष्टि से जी रहे है। परिणाम स्वरूप परिवार का विघटन, स्वार्थी स्वभाव, जिम्मेदारीयाॅ से बचना इस प्रकार के प्रतिकुल प्रभाव परिवार, समाज एवं राष्ट्र पर पड़ रहा है। जरूरी है आरम्भ से ही बच्चों के शिक्षा व्यवस्था सही निर्देशन एवं मार्गदर्शन में हो। शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है अतः एक प्रभावशाली शिक्षक के रूप में कुशलता का विकास शिक्षक के लिए बहुत जरूरी है। इस शोध पत्र के उद्देश्य यह है कि छात्राध्यापकों की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव का उल्लेख करना।

की वर्डः– छात्राध्यापक, कुशलता, विद्यार्थियों के प्रदर्शन।

प्रस्तावना– प्राचीन काल से ही अभिभावक बच्चों के जीवन गढ़ने के लिए शिक्षक पर ही विश्वास करते हैं। शिक्षक ही आने वाले पीढ़ी को बाल्यावस्था से लेकर युवा अवस्था तक युवा पीढ़ी का निर्माण जिम्मेदारी के साथ करते हैं। जब इतनी बड़ी जिम्मदारी का काम इन वर्ग है तो इनके शिक्षा और प्रशिक्षण निश्चित रूप से बहुत ही गंभीरता पूर्वक एवं अनुशासित ढंग से होना चाहिए।

छात्राध्यापक के व्यवहारिक प्रशिक्षण काल बहुत महत्वपूर्ण होता है जब भिन्न–भिन्न विद्यालयों में अभ्यास शिक्षण कार्य लंबे समय के लिए करते हैं तब विद्यालय के विद्यार्थी बहुत दिनों तक इनके सम्पर्क में रहते हैं। वर्तमान समय मे इंटर्नशिप के रूप में 4 या $4^{1/2}$ महिनें तक छात्राध्यापक विद्यालय में जाकर शिक्षण कार्य करते हैं उनके कुशलता का प्रभाव विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर पड़ता है। विद्यार्थी अपने शिक्षक को अपना आदर्श मानकर उनका अनुकरण करते है। छात्राध्यापकों में शैक्षणिक योग्यता के साथ–साथ व्यवसायिक कुशलता भी होना जरूरी है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल अंक, ग्रेड प्राप्त करने में लगा हुआ है इनमें मूल्य शिक्षा और मानसिक विकास प्रभावित हो रहे हैं अतः छात्राध्यापक विद्यार्थियों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत हो कि विद्यार्थी के प्रदर्शन

पभावित हो सके। प्रत्येक छात्राध्यापक को सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए कुछ गुण होना अत्यंत आवश्यक है जो निम्न है:–

1. व्यक्तित्व संबंधी गुण
2. व्यवसाय संबंधी गुण
3. शिक्षण व्यवहार संबंधी गुण
4. संबंध स्थापित करने संबंधी गुण

1. व्यक्तित्व संबंधी गुण :–

(i) स्वास्थ्य:– अच्छा स्वास्थ्य कक्षा में अध्यापन कार्य करने के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्य होना आवश्यक है। एवं अलग अलग कक्षाओं में पढाना है शारीरिक श्रम के साथ–साथ मानिसिक श्रम ही होता है अस्वस्थ होने पर विद्यालय मे अनुपस्थित होगें अतः स्वस्थ्य होना आवश्यक है।

(ii) वेशभूषा–: विद्यार्थियों के सामने छात्राध्यापक के प्रभावशीलता सबसे पहले बाहरी स्वरूप से झलकती है तथा सम्मान के पात्र भी बनते हैं अध्यापक को हमेंशा साफ सुथरी प्रेस किए हुए कपड़े पहनने चाहिए। बाल अच्छे से संवारकर ही कक्षा में प्रवेश करना चाहिए।

(iii) चारित्रिक गुण:–छात्राध्यापक का चारित्रिक गुण उच्चकोटी हो ना चाहिए गलत और अनैतिक आचरण और हरकत नहीं करनी चाहिए चारित्रिक गुणों के कारण ही विद्यार्थियों को अधिक प्रभावित कर सकते हैं तथा विद्यार्थी भी वैसे आचरण को देखकर सीखते हैं।

(iv) आत्मसम्मान:–एक प्रभावशीलता छात्राध्यापक किसी प्रकार के गलत विचार या बात के सामने नतमस्तक नहीं होते किसी प्रकार के अन्याय सहज नहीं करता है अपने अधिकार एवं कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहता है। आत्म सम्मान के बोध ही अध्यापक को योग्य एवं प्रभावशाली बनाता है।

(v) कार्य के प्रति लगन एवं उत्साह :–छात्राध्यापक नये नये अध्यापन कार्य शुरू करने के कारण अधिक कार्य करते है तो अधिक सफलता प्राप्त करते हैं विद्यार्थियों का प्रदर्शन भी कक्षा में सफलता पूर्वक होता है। प्रभावी छात्राध्यपक पूर्ण रूचि एवं उत्साह के साथ कार्य करते हैं तो विद्यार्थी भी उस अध्यापक से प्रसन्न होते हैं।

(vi) नेतृत्व क्षमता :– छात्राध्यापक को नेतृत्वकारी गुणों से युक्त होना चाहिए क्योंकि कक्षा को अनुशासित एवं विद्यार्थियों ध्यान केन्द्रित करने के लिए बहुत आवश्यक है। विषय हो या पाठ्य सहगामी कियाकलापों में विद्यार्थियों के भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए नेतृत्व क्षमता होनी चाहिए।

(vii) धैर्यवानः– प्रायः यह देखा जाता है कि छात्राध्यापक नये नये शिक्षण कार्य में आते है तो धैर्य की कमी से शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर पाते। अगर कोई विद्यार्थी से प्रश्न पुछे और वो गलत उत्तर दिया तो क्रोधित नहीं होना चाहिए धैर्य के साथ सुने एवं सही उत्तर देकर विद्याथी को संतुष्ट करें।

2. व्यवसाय संबंधी गुण

कुशल अध्यापक बनने के लिए छात्राध्यक्ष में व्यावसायिक गुणों का होना आवश्यक है। ये गुण हैः–

(i) विषय का संपूर्ण ज्ञान :– विषय का पूर्ण ज्ञान ही छात्रों के सिखने में कठिनाई और समस्याओं को पता लगाकर समाधान कर सकता है। छात्राध्यापकों के विषय पर अधिकार ही विद्यार्थियों से सम्मान एवं आदर प्राप्त कर सकते है। कक्षा के विद्यार्थियों को आत्मसंतुष्ट कर स्वयं भी प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) व्यवसाय के प्रति ईमानदारी एवं रूची :–एक अध्यापक को अपने कार्य के प्रति पुरी ईमानदार होनी चाहिए। अध्ययन के कार्य पुरी रूचि एवं निष्ठा के साथ करना चाहिए केवल धन कमाना ही उद्‌देश्य नहीं होना चाहिए। व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान रखते हुए उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग छात्राध्यापक के द्वारा किया जाना चाहिए। स्तर के अनुकुल शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए छोटे कक्षाओं के लिए कहानी कथन खेल विधि, प्रदर्शन विधि तथा उच्च कक्षाओं के लिए व्याख्यान विधि, प्रयोगशाला विधि, प्रयोगात्मक विधि उत्तम रहती है।

(iii) शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोगः–

विषयवस्तु के अनुसार शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग कर पाठ को सरल एवं बोधगम्य बना सकते हैं। शिक्षा तकनीकी साधनों का प्रयोग कर सीखने का वातावरण आनन्ददायी प्रस्तुतीकरण के आधार पर शिक्षा जिससे विद्यार्थियों का कक्षा में प्रदर्शन भो प्रभावकारी हो सकेगा। सीखने–सीखाने की तत्परता अच्छे अध्यापक में यह गुण होना चाहिए कि हमेशा ज्ञानार्जन करने की ललक बनी रहती है तथा सृजनात्मक कौशल के साथ विद्यार्थियों को भी लाभ दे सकता है।

(iv) समय का पाबंद :– अध्यापक का सबसे बड़ा गुण समय का पाबंद होना।समय पर विद्यालय जाये प्रार्थना में उपस्थित हो, समय पर कक्षा में जाये और छोड़े और इसका प्रभाव भी विद्यार्थी पर पड़ेगा

(v) कुशल वक्ताः– छात्राध्यापक को आत्मविश्वास के साथ प्रवाहपूर्ण तरीके से बोलना चाहिए पाठ्‌यवस्तु समझौते समय झिझक नहीं होना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों पर उसका प्रभाव पड़े विषय के प्रति उनका ध्यान केन्द्रित रहे।

(vi) मनोविज्ञान का ज्ञानः–छात्राध्यापक सैद्धांतिक रूप से मनोवैज्ञान के ज्ञान महाविद्यालय में पढ़ते हैं परन्तु व्यवहारिक रूप से अनुप्रयोग विद्यालय में कक्षा शिक्षण के दौरान करते हैं। मनोविज्ञान के ज्ञान के आधार परही छात्र के मानसिक स्थिति को समझ कर शिक्षण और निर्देशन का कार्य सफलता पूर्वक कर सकते ह।

(vii) छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूतिः–

छात्राध्यापकों को हमेशा विद्यार्थियों से प्रेम, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संतोषजनक एवं शांतिपूर्ण ढंग से देना चाहिए। उनके सिखने के दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

(viii) विद्यालय में आयोजित गतिविधियों में रूचि :– एक सफल आत्मविश्वासी छात्राध्यापक जहॉ शिक्षण अभ्यास कार्य कर रहे वहॉ आयोजित होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम और गतिविधियों में विद्यार्थियों को भागीदारी करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देना चाहिए जिससे विद्यार्थी सफल प्रदर्शन कर सकते हैं।

3. शिक्षण व्यवहार संबंधी गुण :–

छात्राध्यापक के प्रगति का आकलन करने के लिए विद्यालय के प्राचार्य मेंटोर को लगातार अवलोकन किया जाना चाहिए क्योंकि भावी अध्यापकों में इन गुणों का विकास जहॉ उनके कक्षा के विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव डालेगा वही छात्राध्यापकों में कक्षा के अन्दर शिक्षणविधि, प्रविधि, युक्तियों का प्रयोग, कक्ष–कक्ष व्यवहार सीखने का सकारात्मक वातावरण तैयार होगा। छात्राध्यापक कक्षा में कैसे व्यवहार कैसे व्यवहार कर रहे है। इस पर बच्चों की उपस्थिति निर्भर करती हैं छात्राध्यापक का व्यवहार प्रजातांत्रिक होनी चाहिए।

4. संबंध स्थापित करने का गुणः–

विद्यालय एक लघु समाज है अतः छात्राध्यापकों में समाजिकता एवं संबंध स्थापित करने का गुण होना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी के साथ मधुर संबंध तथा व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों के समस्याओं पर ध्यान देकर उचित समाधान एवं परामर्श देने से विद्यार्थियों पर सकरात्मक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक, अन्य शिक्षक, कर्मचारी, साथी छात्राध्यापको के साथ अच्छा व्यवहार और संबंध होना चाहिए। उनके संबंध और व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ेगा।

निष्कर्षः– उपर्युक्त शोध के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि छात्राध्यापक एक अच्छे और प्रभावी शिक्षक की तरह अध्यापन प्रभावी ढंग से कर रहे हैं दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ है फिर भी विद्यार्थी का प्रदर्शन या उनकी प्रगति उतनी नहीं हो पाती जितना अपेक्षा की जाती है। एक छात्राध्यापक में जिन गुणों का उल्लेख किया गया है वह गुण मौजुद है तो उनके कुशलता का प्रभाव विद्यार्थीयों पर अवश्य पड़ेगा अध्यापक का यह कर्तव्य होता है कि विद्यार्थी का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि कुछ भी हो हर समाज के विद्यार्थी को सुसंस्कृत संस्कारी, अनुशासित जिम्मेदार नागरिक बनाये और यह तभी सम्भव है जब छात्राध्यापक या अध्यापक इन गुणों से युक्त हो। प्रभावी शिक्षक तैयार करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के छात्राध्यापकों के कार्य एंव प्रदर्शन का आकलन इसलिए होना चाहिए ताकि यह पता चले कि अध्यापको में जिन गुणों का समावेश होना चाहिए उनगुणों क समावेश है या नहीं यह पता करना तथा साथ ही मैं छात्राध्यापकों की कुशलता विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है यह छात्राध्यापकों के प्रगति के बारें में डेटा एकत्र करने से यह भी पता चलेगा अध्यापन के परिणाम स्वरूप किस

छात्राध्यापक का प्रदर्शन का प्रभाव अच्छा है किसका बुरा है जिसके आधार पर कमी का पता चलेगा और सुधार होगा।

संदर्भ :–

1. Subhader Pal, Journal of Advances and Scholarly Researches in allied Education.vol.XV, ISSUE NO. 5, July -2018 ISSN 2230-7540, Page-514 -518

2. www.ignited.in